भारत सरकार

कृषि मंत्रालय

कृषि एवं सहकारिता विभाग

राज्‍य सभा

अतारांकित प्रश्‍न सं. 1124

23 मार्च, 2012 को उत्‍तरार्थ

**विषय: गेहूं के उत्‍पादन हेतु नई प्रौद्योगिकी और कृषि पद्धतियां**

**1124: डा. के . पी. रामलिंगम**:

**क्‍या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:**

**(क)** क्‍या विश्‍व में गेहूं का दूसरा सबसे बड़ा उत्‍पादक देश भारत वर्ष 2011-12 फसल वर्ष में 85.47 मीट्रिक टन की रिकार्ड पैदावार करने की ओर अग्रसर है और इसने वर्ष 2020 तक 95 मीट्रिक टन गेहूं की पैदावार करने का लक्ष्‍य निर्धारित किया है ;

**(ख)** यदि हां, तत्‍संबंधी ब्‍यौरा क्‍या हैं;

**(ग)** क्‍या सरकार गेहूं के उत्‍पादन हेतु बेहतर फार्म कार्यविधि का विकास करने वाले अन्‍य गेहूं उत्‍पादक देशों द्वारा अपनाई जाने वाली नई प्रौद्योगिकी और कृषि पद्धति अपनाने का विचार रखती है ; और

**(घ) यदि हां, तो तत्‍संबंधी ब्‍यौरा क्‍या है ?**

**उत्‍तर**

**कृषि मंत्री (शरद पवार)**

**(क) तथा (ख):** जी, हां । यह सत्‍य है कि भारत विश्‍व में गेहूं का दूसरा बड़ा उत्‍पादक है तथा डी ई एस के द्वितीय अग्रिम अनुमान के अनुसार 2010-11 के दौरान 86.87 मिलियन टन (मी.) का रिकार्ड उपज तथा 2011-12 के दौरान 88.31 मीट्रिक टन का रिकार्ड उत्‍पादन अनुमानित है । इसका उद्देश्‍य आने वाले वर्षों में, खाद्यान्‍नों की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए गेहूं का अधिक उत्‍पादन तथा उत्‍पादकता प्राप्‍त करना

है ।

**(ग) तथा (घ):** भारत के पास विभिन्‍न कृषि पारिस्‍थितिकी क्षेत्रों के लिए उपयुक्‍त प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए सशक्‍त गेहूं अनुसंधान तथा विकास नेटवर्क है । गेहूं अनुसंधान नेटवर्क द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों में राष्‍ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, बृहत कृषि प्रबंधन, राष्‍ट्रीय कृषि विकास योजना तथा अन्‍य राज्‍य क्षेत्र कार्यक्रम जैसे विभिन्‍न केन्‍द्रीय प्रायोजित स्‍कीमों का संवर्धन किया जा रहा है । देश में सीजीआईएआर प्रणाली के अंतर्गत अंतर्राष्‍ट्रीय संगठनों के सहयोग से सीएमएमवाईटी मेक्‍सिको, आईसीएआरडीए, सीरिया तथा एसीआईएआर आस्‍ट्रेलिया जैसे प्रणालियां विकसित की है । इन संगठनों द्वारा विकासित तथा भारतीय परिस्‍थितियों में परीक्षित प्रौद्योगिकी,भारतीय परिस्‍थितियों में उनकी उपयुक्‍तता के लिए एक अंगीकृत विषय है । उदाहरण के लिए, सीआईएमएमवाईटी मेक्‍सिको में विकसित कुछ उच्‍च पैदावार जीनोटाइप भारतीय परिस्‍थतियों में उपयुक्‍त पाए गए तथा इसलिए किस्‍मों के रूप में देश में खेती के लिए जारी किए गए ।

----